12.12.67 ओमशांति रात्रीक्लास

किसको बाबा बच्चे कहते हैं और किसको माइया कहते हैं। जरूर कुछ तो फर्क होगा। कोई की सर्विस से खुशबू आती है। कोई तो जैसे कि अक्क कै। यह तो बाप ने समझाया है कि तुम जैसे हमारे साथ आये हो उपर से। बाप भी आये हैं विश्व को(का) मालिक बनाने के लिए। तुम्हारा भी यह कर्तव्य है। वहां से जो पहले आते हैं वो तो जरूर ही खुशबू देते होंगे। बगीचे से भी भेंट करते हैं ना। जैसे सर्विस वैसा खुशबूदार फूल भी। विवेक भी कहता है कि शिवबाबा का बच्चा कहलाया तो हकदार भी बना। तो वो खुशबू भी आनी चाहिए। हकदार है तब तो सबको नमस्ते करते हैं। तुम विश्व का मालिक बेशक रहते हो ;किंतु पढ़ाई में फर्क तो बहुत रहता है। यह तो होना भी है जरूर। बच्चों को तो निश्चय हो जाता है कि यह बाबा है और चक्र भी बुद्धि में आ जाता है। तो बाप कहते हैं कि और जास्ती क्या पढ़ावें? बाप के बिगर और कोई भी स्वदर्शन चक्रधारी बना ना सके। बनते भी हैं तो इशारे से। जो कल्प पहले बने हैं वो ही बनते हैं। ढेर के ढेर ही बच्चे आते हैं। पवित्रता के उपर कितनी अत्याचारी होती है। कितना ही डरते हैं, जिसके द्वारा बाप गीता भी सुनाते हैं फिर इनको गालियां देते हैं। उनको तो गाली लगती नहीं है। बाप कहते हैं कि जब बहुत गाली देते हैं कच्छ–मच्छ अवतार कह देते हैं तब मैं आता हूं। ना जानने कारण बाप पर और तुम्हारे पर कितने कलंक लगाते हैं। कितने बच्चे माथा भी मारते हैं। पढ़ाई में कोई तो बहुत साहुकार हो जाते हैं और वो कितना ही कमाते हैं। एक/एक ऑपरेशन में दो/दो तथा चार/चार हजार मिल जाते हैं। कोई तो कुटुम्ब की पालना भी नहीं कर सकते। फर्क है ना। कोई जन्म–जन्मांतर लिए बादशाह बनते हैं। कोई तो जन्म–जन्मांतर लिए गरीब बनते हैं। बाप कहते हैं तुमको कितना समझदार बनाते हैं। अभी तुम सभी बातों में कहेंगे ड्रामा है। सभी का पार्ट है। जो पास्ट हुआ ड्रामा। होता वही है जो ड्रामा में है। ड्रामा अनुसार जो कुछ होता है ठीक है। कितना भी हम समझावें समझते नहीं हैं। इसमे मैनर्स भी अच्छी चाहिए। हर एक अपने अंदर में देखें कोई खामी तो नहीं है। माया बहुत कड़ी है उनको कैसे भी करके निकालना है। सभी खामियां निकालनी हैं। बाप कहते हैं बांधेलियां सबसे जास्ती याद में रहती हैं। वह ही अच्छा पद पाती हैं। जितना मार खाती हैं उतना जास्ती याद करती हैं। हाय शिवबाबा निकलेगा। ज्ञान से शिवबाबा को याद करती हैं। उन्हों का चार्ट अच्छा रहता है। ऐसे जो मार खाकर आती हैं वह सर्विस में अच्छी लग जाती हैं। अपना जीवन उंच बनाने लिए अच्छी सर्विस करती हैं। सर्विस न करें तो दिल खाती है। दिल टपकती है हम जावें सर्विस पर। भल समझते हैं सेंटर छोड़कर जाना पड़ता है ;परंतु प्रदर्शनी में सर्विस बहुत हैं। तो सेंटर का परवाह न कर भागना चाहिए। जितना हम दान करेंगे उतना बल भी हमको मिलता रहेगा। दान भी जरूर करना है ना। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। जिनके पास होंगे वही दान करेंगे। बच्चों को बाप को बैठे हुए देखने से सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान आ जाना चाहिए। सारा चक्र फिरना चाहिए बाप ही इस सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानने वाला है। जरूर ज्ञान का सागर है। सृष्टि चक्र को जानने वाला है। यह दुनियां के लिए बिल्कुल ही नया ज्ञान है ,जो कब पुराना बनता ही नहीं है। वंडरफुल नालेज है ना ,जो बाप ही बताते हैं। कोई कितना भी साधु,महात्मा हो सीढ़ी का ढाका उपर जाता ही नहीं। सिवाय बाप के मनुष्य गति–सदगति दे न सकें। न मनुष्य ,न देवता दे सकते हैं। सिर्फ एक बाप ही देते हैं। दिन–प्रतिदिन वृद्धि होनी ही है। बाप ने कहा था प्रभात फेरी में यह ल.ना. का चित्र ,सीढ़ी का चित्र ,ट्रांसलाइट का भी होना चाहिए। बिजली की कोई ऐसी चीज हो जिससे चमक आती रहे। सलोगन भी बोलते जायें। सन्यासी कब राजयोग सिखाय न सकें। राजयोग एक परमपिता परमात्मा ही सिखाय रहे हैं भागीरथ द्वारा। ऐसी2 बहुत आवाज सुनेंगे। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

ओमशांति